Vol 5 Issue 2 March 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-2 | March-2015
Available online at www.isrj.org

अभिराज राजेन्द्र मिश्र रचित प्रमद्वरा नाटिका का कथास्रोत

गीताबेन पी. पटेल

शोधछात्रा जे.जे.टी. यु नि. राजस्थान

सारांश :– आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्वातंत्र्योत्तरकालिन कवियों में कवि अभिराज राजेन्द्र मिश्र मूर्धन्य स्थानीय है। कवि सदा पर्यटनशील विद्वद्वोष्ठी में लीन एवं अनेक संस्थाओं से सम्बन्धित कवि है। प्रयाग के निवासी एवं संस्कृत हिन्दी भोजपुरी में रचनायें करने से त्रिवेणी कवि के रुप में प्रसिद्ध है।

प्रमद्वरा नाटिका की कथावस्तु के अधिकारिक दो भेद होते है। नाटिका में प्रायः पताका का अभाव होता है। प्रकरी होती है। नाटिका में कथावस्तु कवि कल्पित मानी गई है। प्रयोजन नाटक के पुरुषार्थ चतुष्टय होते है। परन्तु नाटिका में केवल कामपुरुषार्थ प्रयोजन रुप में होता है। प्रमद्वरा नाटिका का प्रयोजन रुरु से प्रमद्वरा की प्राप्ति है।

प्रस्तावना :–

प्रमद्वरा और रुरु की कथा महाभारत के आरण्यक पर्व में पायी जाती है। और देवीभागवत 2–9 में भी पायी जाती है। विश्वावसु गान्धर्वराज और मेनका से उत्पन्न प्रमद्वरा ऋषि स्थूलकेष द्वारा पालन पोषण प्राप्त करती है। उसका विवाह रुरु से हुआ था। प्रमद्वरा की मृत्यु सर्पदंष के कारण हुई। रुरु ने अत्यधिक विलाप किया। पश्चात् आधी आयु उसने प्रमद्वरा को जीवित की थी। रुरु ने सर्पो के प्रति विद्वेष के कारण सर्पो को मारने लगा तो डुण्डुभक साँपने सर्प विषैला है कि नहीं उसकी तलाष करके ही मारने का उपदेष दिया। डुण्डुभक पूर्वजन्म में षस्त्रपात ऋषि था। और रुरु के दर्षन से उसकी मुक्ति हुई।

कवि ने महारानी सुवर्णा की ज्येष्टरानी के रुप में कल्पना की हैं। डुण्डुभक को रुरु का मित्र बनाया है। नवमालिका और यूथिका भी कवि कल्पित पात्र है। डुण्डुभक रुरु को प्रमतिनन्दन कहा है। प्रथम अंक में प्रणयरागांकुर , द्वितीय अंक में नायक – नायिका की कामायमान,अवस्था,तृतीय अंक में प्रमद्वरा का अभिसार और चतुर्थ अंक में प्रमद्वरा की मृत्यु एवं आधी आयु देकर प्रमद्वरा को जीवित की जाती है। प्रमद्वरा नाटिका के लक्षणों के अनुसार पूर्णरुप से नाटिका है।

भारतीय आचार्यो ने नाट्य में पांच तत्त्वों का स्वीकार किया है। (1) वस्तु (2) पात्र (3) रस (4) अभिनय और (5) वृत्ति। रूपकों के तीन भेदक तत्वों माने गये है। वस्तु, रस और नेता। कैषिकी वृत्ति की समीक्षा में वस्तु या इतिवृत्त की प्रथम समीक्षा की जाती है। वस्तु, कथा, कथानक या इतिवृत्त ये सभी पर्याय है। संस्कृत आलंकारिकों ने कथावस्तु के दो भेद माने हैं– आधिकारिक और प्रासंगिक।

(1) आधिकारिक वस्तु:

आधिकारिक कथावस्तु का आरंभ से अंत तक निर्वहण होता है। इस कथा का फल पानेवले को अधिकारी या कथानायक कहा जाता है।1

(2) प्रासंगिक कथावस्तु:

प्रसंगवषात् नाट्य में आनेवाली कथा या कथाओं का प्रासंगिक कथा नाम दिया गया है। आधिकारिक कथावस्तु के बाद उसका आरम्भ होता है। और मुख्य कथावस्तु की समाप्ति होती है। इस कथा की योजना आधिकारिक को सहाय करने के लिए होती है। और प्रसंगवषात् उसका फल भी प्रासंगिक कथावस्तु के नायक को मिलता है। इस कथा द्वारा दूसरे का हेतु सिद्ध होता है।2 प्रासंगिक कथा के दो भेद होते है। पताका और प्रकरी।

पताकाः

आधिकारिक कथा के साथ प्रायः अंत तक रहनेवाली कथा का 'पताका' नाम दिया गया है।3

प्रकरीः

मर्यादित समय के लिए चलनेवाली कथा को प्रकरी कहते है। कथावस्तु के अन्य प्रकार से तीन भेद किये जाते है। प्रख्यात,उत्पाद्य और मिश्र। इतिहास पुराण या जनश्रुति के आधार पर कथा का निर्माण किया जाता है। इसे प्रख्यात कथा कहते है।4 कवि ने स्वतंत्रता कथावस्तु की कल्पना की है। उसको उत्पाद्य कथावस्तु कहते है।5 इतिहास के साथ कल्पना का मिश्रण किया गया है।6 परन्तु नाटिका के लक्षणों में बताया गया है कि नाटिका की वस्तु कवि कल्पित होती है।7 प्रयोजनः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ में से कोई एक पुरुषार्थनी सिद्धि काव्यमात्र का प्रयोजन होता है। नाटिका की कथावस्तु कवि कल्पित होने से उसके मूल स्वभाव होने की संभावना नहीं है। परन्तु प्रमद्वरा और रुरु की कथा संक्षेप ने महाभारत के आरण्यक पर्व और अनुषासन पर्व में पायी जाती है। देवी भागवत में इस कथा दी गई है। इस तरह प्रमद्वरा की कथा महाभारत में प्राप्त होने से प्रख्यात कह सकते है। परन्तु कवि ने इस संक्षिप्त कथा का केवल थोडा सा आधार लिया है।

महाभारत मे ं प्राप्त कथाः

महाभारत के अनुषासन पर्व के अनुसार रुरु एक ऋषि कुमार था, जो च्यवनऋषि का पौत्र और प्रमतिऋषि का पुत्र था। उसकी माता धृताची नाम की अप्सरा थी।8 इसके पुत्र का नाम षुनक था। जो प्रमद्वरा से उत्पन्न हुआ था।9 महाभारत आरण्यक पर्व में यह कथा पायी जाती है।10 देवीभागवत 2–9 में भी रुरु और प्रमद्वरा के सम्बन्ध की कथा पायी जाती है। प्रमद्वरा एक अप्सरा थी, जो मेनका और विश्वावसु गन्धर्वराज द्वारा उत्पन्न हुई। ऋषि स्थूलकेष ने उसका पालन पोषण करके उसका विवाह रुरु नाम के ऋषि से किया था।11 इसकी कथा का प्रसंग इस प्रकार प्राप्त होता है।

प्रमद्वरा की मृत्यु सर्पदंष के कारण हो गई। रुरु ने अत्यधिक विलाप किया। पश्चाताप करके अपनी आधी आायु देकर उसे पुनः जीवित किया।12 इस प्रसंग के कारण इसके मन में सर्पजाति के विषेष रोष उत्पन्न हुआ। एवं सर्प को देखते ही उसे मारने का प्रारंभ किया। एक बार वह डुण्डुभक साप को मारनेवाला ही था। उस समय सर्प ने कहा, 'साप को मारने से पहले वह विषैला है कि नहीं यह सोचकर उसे मारा करो।' पश्चात् डुण्डुभक ने इसे अहिंसा एवं वर्ण धर्म का उपदेष दिया। इस नाटिका में रुरु का मित्र डुण्डुभक है। रुरु की वियोगावस्था और रुरु की महारानी सुवर्णा की कल्पना कवि ने कही है। नवमालिका,यूथिका – नारीपात्र कवि ने कल्पित किये है। डुण्डुभक उनको प्रमतिनन्दन कहता है। इससे सिद्ध होता है कि महाभारत इस कथा का आधार है। प्रमद्वरा को मिलने के लिए रुरु उत्कंठित होता है। प्रथम अंक में प्रणयरागाङ्कुर का निरूपण हुआ है। दूसरे अंक में कामायमान अवस्था में प्रमद्वरा की भी वैसी अवस्था का निरूपण रागाङ्कुर के संघर्ष का निरूपण है। तृतीय अंक में सखी मदालसा के साथ प्रमद्वरा की कामायमान अवस्था का निरूपण और रुरु के साथ मुलाकात का प्रसंग में प्रणय के अभिसार का दर्षन करता है। चतु र्थ अंक में सर्पदंष से प्रमद्वरा की मृत्यु का वृत्तांत है। इस वृत्तांत को रुरु ने नहीं जाना। पुरोचन ने डुण्डुभक ने अवगत कराया कि देवी सुवर्णा जो प्रमद्वरा के चित्र देखकर दूर फेंक दिया था, वह देवी सुवर्णा ने रुरु का प्रमद्वरा के प्रति परम अनुराग देखकर सहदया हो गई है। पति के सुख के लिए अपने सुख का बलिदान देने को तैयार हो गई है। नवमालिका ने बताया कि स्वामी ने सैन्धवारण्य में वृत्तांत बताया कि 'प्रमद्वरा को विषवैद्य के पास ले जाओ।' नवमालिका को सुवर्णा ने बताया कि अगर जो मेरे प्रिय पति कि इच्छापूर्ण न करूँ तो क्या लाभ ? डुण्डुभक सुवर्णा के पास गया। नवमालिका और डुण्डुभक संवाद से प्रगट होता है कि डुण्डुभक दाम्पत्य प्रेम से अभिभूत हुआ है परन्तु प्रमद्वरा की स्थिति से चिंतित होता है। रुरु मिश्र विष्कम्भक में प्रगट हुई बाते बताते है कि कुछ ही क्षणों में देवी सुवर्णा परिवार के साथ तपोवन में आयेगी। जहाँ रुरु प्रमद्वरा की स्थिति पर आक्रंद करता है। डुण्डुभक भी सामान्य व्यक्ति की तरह विलाप न करने के लिए रुरु को समजाता है। रुरु ने बताया कि उसे प्रमद्वरा के बिना क्षणभर जीने की इच्छा नहीं। उसने आजीवन जो तप किया है उस तप के प्रभाव से प्रमद्वरा को जीवित करने के लिए रुरु ने प्राणायाम करके आचमन के बाद मन्त्रपूत जल से अभ्युदय के लिए वारणमण्डल बनाया। सुवर्णा ने प्रमद्वरा के प्रति भगिनीभाव प्रगट किया। डुण्डुभक ने रुरु को षोक पर अंकुष करने के लिए कहा। उसी समय यम ने आकाषवाणी से रुरु को सूचित किया कि मन्त्रभाव छोड लो। रुरु ने यम को प्रमद्वरा को छोड देने की प्रार्थना की। यम ने रुरु को बताया कि, 'अपना आधा आयुष्य प्रद्वरा को देने से वह जीवित हो सकती है।' रुरु ने वैसा किया सुवर्णा प्रतिज्ञा करती है कि, 'प्रमद्वरा जीवित होने पर रुरु से विवाह करुँगी।' प्रमद्वरा जीवित हुई। सुवर्णा ने प्रमद्वरा का पाणिग्रहण रुरु से करवाया। कवि ने दैव की कल्पना करके नवमालिका और डुण्डुभक के संवाद में आर्य भट्टिनी ने की हुई भर्त्सना और इर्ष्या के साथ प्रियतम की अभिलाषा जानकर भट्टिनी स्वयं प्रमद्वरा और रुरु के प्रणय का पोषण करती है।

प्रमद्वरा एक नाटिका है। नाटिका के लक्षणों के अनुसार कवि ने ज्येष्ठा नायिका के रूप में सुवर्णा की कल्पना की है। और प्रमद्वरा कनिष्ठ नायिका है। दोनों के प्रणय की कथा का स्वरूप कवि ने दिया है। जो महाभारत या देवी भागवत में नही पायी जाती। यहाँ सर्पदंष से प्रमद्वरा की मृत्यु हो गई। आधा आयुष देना और रुरु डुण्डुभक से संवाद का निरूपण प्राप्त नहीं

है। कवि ने अनेक पात्रों की कल्पना की है। पुरुष पात्र कम है और नारी पात्र अधिक है।

प्रमद्वरा की कथावस्तु देखते ही निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रमद्वरा और रुरु एवं डुण्डुभक नाम और संक्षिप्त कथा ही महाभारत और देवीभागवत में पाये जाते है। रुरु और प्रमद्वरा का अनुराग चतर्थ अंक का संपूर्ण आकलन कवि ने अपने ढंग से किया है। श्री हर्ष की रत्नावली और प्रियदर्षिका का असर कथावस्तु के संकलन में पाया जाता है। इस में सिद्ध होता है कि नाटिका के लक्षणों के अनुसार प्रमद्वरा की कथावस्तु कवि कल्पित ही है। उसको प्रख्यात कथावस्तु नहीं मान सकते।

गीताबेन पी. पटेल
शोधछात्रा जे.जे.टी. यु नि. राजस्थान

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org